मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

शुष्क क्षैत्रों में स्थायी कृषि की आवश्यकता – औषधीय फसलें

अंजू बिजारणियाँ[1], रोशन कुमावत[1], बसु देवी यादव[2]

[1]शस्य विज्ञान विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा [2]मृदा विज्ञान विभाग, स्वामी केशवानन्द राजस्थान, कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर।

भारतवर्ष में मानसून वितरण में बड़ी असमानता हैं, कहीं 2000 मिमी, वर्षा तो कहीं 200 मिमी. के लिए भी तरसना पड़ता है। भारत के कुल भू–भाग का 30 प्रतिशत भाग शुष्क है यह मुख्यतः सात राज्यों राजस्थान, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, कर्नाटक व आन्ध्रप्रदेश में है, जिनका 60 प्रतिशत तो सिर्फ राजस्थान के ग्यारह उत्तर–पश्चिमी जिलों में ही है। अतः इन शुष्क क्षेत्रों में वर्षा की अनश्चितता के कारण सूखे या अकाल की संभावनाएँ अक्सर बनी रहती है तथा इन क्षैत्रों की रेतीली भूमि की संतुलन क्षमता (बफर केपिसिटी) भी धीरे–धीरे कम होती जा रही है इसका कारण अविवेकपूर्ण सिंचाई, रासायनिक उर्वरक व कीटनाशक आदि का उपयोग माना जाता है। ऐसी परिस्थितियों में परम्परागत फसलों (बाजरा, गेहूँ, दालें, सरसों, कपास, सोयाबीन) के उत्पादन में भारी अनिश्चितता रहती है वहीं औषधीय पौधे सूखा सहनशील होने से 2–5 गुना ज्यादा लाभकारी नगदी फसल के रूप में शुष्क क्षैत्रों हेतु उपयुक्त है। परिणाम दर्शाते हैं कि गेहूँ तथा सोयाबीन की फसलों से किसान औसत प्रति हैक्टेयर अधिकतम 30–35 हजार रूपये प्रतिवर्ष कमा सकता है तथा सफेद मूसली की खेती से प्रति हैक्टेयर 1.25–2.50 लाख रूपये तक प्रतिवर्ष अर्जित किये जा सकते हैं। इस प्रकार किसानों द्वारा जड़ी बूटियों की खेती अपनाना श्रेयकर है।

शुष्क क्षेत्रों में स्थायी कृषि की आवश्यकताः– कारण निम्न समस्याओं की वजह से सामन आये।

1. इन्दिरा गांधी नहर के सिंचित क्षैत्र का लगभग 45 प्रतिशत भाग जल प्लावन लवणीकरण की समस्या से ग्रसित होना।
2. नलकूपों से सिंचित क्षैत्र में भू–जल स्तर में तेजी से गिरावट होना।
3. मशीनीकरण (ट्रेक्टर) से छोटे–छोटे पौधे उखाड़कर खेत वनस्पति विहीन होते जा रहे हैं।
4. वर्षा कम होती जा रही जलवायुविक कारकों के कारण मरूस्थलीकरण की समस्या बढ़ती जा रही है।

वर्तमान में इस बात की आव यकता महसूस की जा रही है कि प्रकृति के साथ तालमेल रखते हुए किस प्रकार खेती में स्थायित्व प्राप्त किया जा सके। इसे स्थायी कृषि आदि नामों से जाना जा रहा है। भारत में औषधीय पौधों की प्रजातियों में बहुत अधिक भिन्नता है जिससे उनका उत्पादन एवं अनुसंधान में महत्व और भी बढ़ जाता है। यहाँ पर आवागमन साधक अधिक उपज वाली प्रजातियाँ, औद्योगिक संसाधन, नई तकनीक विकसित होने से आने वाले समय में इन पौधों का कार्यक्षैत्र एवं महत्व बढ़ेगा। भारत सरकार के स्वास्थ्य एवँ परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन भारतीय चिकित्सा पद्धति एवँ हाम्योपेथिक विभाग के औषधीय पादप बोर्ड द्वारा दे में औषधीय एवं सुगंधीय फसलों की खेती को बढ़ावा देने के सार्थक एवं कृषक अनुकूल प्रयास किये गये हैं। विभाग द्वारा ऐसे 28 पौधों को पहचाना गया है जिनकी देश–विदेश में पर्याप्त मांग है।

औषधीय पौधों की खेती की आवश्यकताः–

रोगापचार हेतु औषधि निर्माण में ये पौधे पहले वनों, तालाबों, पर्वतों तथा खुले स्थानों से प्राप्त होते थे परन्तु आबादी बढ़ने से इन वनस्पतियों का उत्पादन तथा कुछ औषधीय पादप तो विलुप्त होने की श्रेणी में आ गये हैं। दूसरी ओर संश्लेशित (कृत्रिम) औषधीय के कुप्रभाव बढ़ने से पौधों से बनने वाली दवाओं का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। आज भारतीय व विदेशी बाजारों में हर्बल उत्पादों तथा जड़ी बुटियों की मांग तेजी से बढ़ रही है। विश्व स्वास्थ्य संस्थान (WHO) ने अनुमान लगाया है कि विकासशील देशों की 80 प्रतिशत जनसंख्या परपम्रापगत औषधियों से जुड़ी हुई हैं जबकि वर्तमान में अंग्रेजी दवाईयों में 25 प्रतिशत भाग औषधीय पौधों का तथा शेष कृत्रिम पदार्थ का होता है। इसी प्रकार से ऐलोपेथी के साईड इफेक्ट होने के कारण लोगों का ध्यान हर्बल उत्पादों की ओर जा रहा है। औषधीय खेती की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि ये विभिन्न कीट–व्याधियों से सुरक्षित है तथा इन पर प्रतिकूल मौसम का प्रभाव भी नहीं पड़ता। औषधीय पौधों को कोई

विशेष खाद की आवश्यकता भी नहीं होती है और इससे खाद व दवाईयों पर होने वाला खर्चा भी बचता है। अन्य पक्ष में औषधीय पौधों की खेती से न केवल इन पौधों का संरक्षण प्राप्त होगा वरन् शुष्क परिस्थितिकी तंत्र का भी संरक्षण होगा व परस्पर संरक्षण का यह एक अनुठा उदाहरण बन सकता है।

अतः किसान इनका उत्पादन कर अपनी आर्थिक नींव तो मजबूत करेगा ही साथ में समाज में व्यक्तियों के स्वास्थ्य की भी रक्षा कर सकेगा।

औषधीय पौधों की खेती हेतु विभाग द्वारा कृषकों को यथासम्भव सहायता करने का भी प्रावधान है जिसकी विस्तृत जानकारी रेडक्रास रोड़, नई दिल्ली स्थिति बोर्ड के कार्यालय से ली जा सकती है।

राजस्थान परिदृश्य में औषधीय पौधों का विस्तारः–

- ❖ अश्वगंधा (असगंध) – बांरा, झालावाड़, कोटा क्षैत्र।
- ❖ सोनामुखी (सनाय) – राजस्थान का जोधपुर संभाग।
- ❖ ईसबगोल (साटूलिया) – राजस्थान के दक्षिणी भाग के कुछ जिले।
- ❖ सफेद मूसली (क्लोरोफाइटम) – कुंभलगढ़, बांरा जिले में।

कुछ प्रमुख औषधीय पौधों की पहचान व उपयोगिता

क्र.सं	औषधीय पौधों का नाम व विवरण	पहचान	उपयोगिता
1.	ईसबगोल साधारण नाम–अस्पगोल वानस्पितिक नाम– प्लान्टगो ऑवेटा कुल – प्लैण्टेजिनेसी	इसके पौधे में गोल लम्बाकार गुच्द रूप में पुष्प लगते हैं तथा पत्ते लम्बाकार व दंताकार सतह लिये रहते हैं। इसके फूल गुदेदार केप्सूल 8.00 मिमी. लम्बाई तथा ऊपर की हिस्से में शंकू के आकार के होते हैं तथा बीज पीले भूरे रंग के 3.00 मिमी. लम्बे नाव के आकार के होते हैं।	इसके बीजों पर पाया जाना वाला छिलका ही इसका औषधीय उत्पाद है। इस छिलके में एक लसलसा पदार्थ रहता है। जिसमें अपने वजन से कई गुना पानी सोखने के क्षमता है। इसी को भूसी कहते हैं। जो कि विभिन्न बिमारियों जैसे कब्ज, दस्त, आंत पेचि I, बवासिर आदि में काम आती हैं।
2.	सनाय साधारण नाम–सेना, सोनामुखी वानस्पतिक नाम–केसिया अंगस्टीफोलिया कुल–केसलपिनियासी	यह एक बहुवर्षीय पौधा है जिसकी ऊँचाई 60–65 सेमी., बंजर भूमि के लिए उपयुक्त पत्ते 2–5 सेमी. लम्बे, फलियाँ 3–7 सेमी. लम्बी, 2 सेमी. चौड़ी हल्की भूरी से गहरा भूरापन लिये हुए। जिसमें 5–7 अधोमूखी अण्डाकार भूरे रंग के चिकने बीज होते हैं। इस पौधे को पशु नहीं खाते है।	पेट से संबधित बिमारियों के अलावा पीलिया, अस्थमा, मलेरिया, अपच आदि में इसकी पत्तियों का उपयोग आयुर्वेदिक, ऐलोपेथिक, यूनानी व होम्योपेथिक दवाईयों में कर रहें हैं तथा विदेशों में इसकी अच्छी मांग है।
3.	अश्वगंधा साधारण नाम–असगंध, असंध वानस्पतिक नाम–विथेनिया सोम्निफेरा कुल–सालेनेसी	यह एक झाड़ीदार 2–3 फीट ऊँचा पौधा है, पत्तों को मसलकर सुंधने पर घोड़े के मूत्र की सी गंध आती है। छोटे–छोटे चिलम के आकार के हल्के पाले से हरे फूल शाखाओं के अग्र भाग पर आते है, फल का	इसकी जड़ कसैली, कड़वी, चरपरी, विषाक्त होती है। यह अत्यंत बलवर्धक, वीर्यवर्धक, पुष्टिकारक तथा शवास, क्षय शोध विषकृमि व्रण और प्रामवातनाशक है इसका उपयोग निर्बलता,

		ऊपरी भाग फूले फूग्गे के आकार में, फल के अंदर सफेद पिताभ के लिए छोटे–छोटे बीज होते हैं।	वृद्धावस्था, नपुसंकता, गर्भधारण वार्थ रक्त/ वेत प्रदर (स्त्रियों मे), रक्त विकार संधिपात, खांसी, ज्वर, विष व बवासीर के उपचार में किया जाता है।
4.	सफेद मूसली साधारण नाम–रवेरूआ, सुफता मुसली, धौली मुसली वानस्पतिक नाम–क्लोरोफाईटम बोरीविलियनम	यह एक कन्द युक्त पौधा है जिसकी अधिकतम ऊँचाई 45 सेमी. तक होती है। तथा कंदिल जड़ें (फिंगर्स) जमीन जमीन में अधिकतम 25 सेमी. तक जाती है।	यह त्रिदोश नाशक, बल एवं पुष्टिकारक, शुक्राणु व काम शक्तिवर्धक, रक्त दोष एवं अतिसार नाशक, दमा, क्षय व मधुमेह में उपयोगी है।

औषधीय पौधों की कुछ उपयुक्त किस्मेंः–

क्र.सं.	**पौधे**	**किस्में**
1.	ईसबगोल	गुजरात ईसबगोल–1, 2 हरियाणा ईसबगोल–5
2.	सोनामुखी	सोना, ALFT-2
3.	अश्वगंधा	जवाहर अश्वगंध

औषधीय पौधों की खेती के लिए कुछ व्यावहारिक सुझावः–

औषधीय पौधों की खेती अभी शुरूआती अवस्था में है इनकी उत्पादन तकनीक, बाजार आदि भी पारंम्परिक खाद्य फसलों जितनी विकसित नहीं है अतः निम्न सुझावों पर ध्यान देना चाहिये।

1. खाद्य उत्पादन हमारी प्राथमिकता है, अतः जो जमीन खाद्य फसलों के लिए उपयुक्त हैं उन पर औषधीय पौधों की खेती को प्राथमिकता न दी जाये, अनुपयुक्त भूमि पर ही खेती करनी चाहिये।
2. औषधीय पौधों की खेती में उत्पादन लागत ज्यादा आती है। जबकि खेतों से या खुले स्थानों से जो संग्रह होता है उसमें व्यय कम आता है। अतः खेती से उत्पादित फसल के मुकाबले कम मूल्य पर बाजार में बिकती है। अतः किसानों को सहकारी विक्रय का प्रयास करना चाहिए। यदि काफी बड़े क्षैत्र में मिलाकर सहकारी खेती की जाये तो विपणन में कोई कठिनाई नहीं होगी।
3. सभी औषधीय पौधों की उत्पादन तकनीक विकसित करना व विपणन का प्रबंध करना सहकारी प्रयासों से संभव होने में समय लग सकता है।

अतः किसानों को स्वयं के खेत और परिस्थतियों के अनुकूल व बाजार मांग को देखते हुए और फिर विशेषज्ञों की राय लेकर इन पौधों की खेती करनी चाहिये।